मैं कृष्णा सुरेश चौहान । मैं अपने बचपन से लेकर अब तक कि यात्रा के बारेमे बता रहा हु । मैंने अभीतक ही पढ़ाई की है मारवाड़ी कमशल स्कूल से । मै एक रगबी खिलाडी हुं । मैने रगबी खेलना बचपन से ही सुरु किया हु । जब मे 8 साल का था तब मैंने रगबी खेलना सुरु किया । मैंने रगबी खेलना सीखा हु आल ड्रीम्स फाउंडेशन से ही । श्री रवि चौहान मेरे कोच थे । उनोने ही मुझे खेलना सिखाया है। रवि सर के अंडर खेल के मुझे बहुत खुसी होती है और उनसे मुझे बहुत कुछ सीखने मिला है । मैंने उनके साथ साथ खेलके बहुत कुछ सीखा हु खेल के बारेमे ओर जिंदगी के बारेमे भी । रवि सर ने मुझे बहुत मदत की है ।

मेरा पहला मैच टच रगबी था । टच रगबी से कैसे पास करते है कैसे एक दूसरे को इशारा कर सकते है ये सब सीखने मिला फिर धिरे धिरे मैंने टेकल रगबी खेलना सीखा । मैंने टेकल रगबी का पहला मैच हमारी टीम आल ड्रीम फाउंडेशन से खेला । यह मैच उड़ीसा मे था । यह मैच से मुझे बहुत कुछ सीखने मिला । फिर मैंने ओर ज्यादा मेहनत की । फिर हमारी टीम आल ड्रीम फाउंडेशन बॉम्बे कप खेलने गए । वहां पे महाराष्ट्रा टीम के सलेक्टर आये थे उन मेरा खेल पसंद आया तो उनोने मुझे सलेक्शन के लिए बुलाया । इस सलेक्शन

से मैंने अपना बेस्ट दिया और मैं सेलेक्ट हुआ फिर मैंने महाराष्ट्रा से खेला। महाराष्ट्रा टीम रनर उप थी उस टूर्नामेंट में।

हमारी आल ड्रीम फाउंडेशन ने बहुत मेहनत की तो हमारे कोच रवि सर को लगा कि हमारी टीम थर्ड डिवीजन खेल सकती है करके उनोने हमारी टीम को थर्ड डिवीजन खेलने लगाया और हमने उनको निराश नहीं किये। उनको हमने फाइनल जिताया। यह मैच के बाद सर को मेरा खेल पसंद आया तो उनोने मुझे फिर से महाराष्ट्रा सिलेक्शन के लिए भेजे। मेरा सिलेक्शन हुआ और मैंने महाराष्ट्रा के लिए खेला। यह थी मेरी अब तक की यात्रा।